वंदना

तर्ज़– अपना आप पहिचान बन्देया ... ...

बख़्श लयो इक वार मैत्थों बिगड़ी ए ।। टेक।।

मैं कपटी गुणहीन विचारा,
किस विधि होवे पार उतारा।
मैं हूं मुगध गंवार, मैत्थों ... ...

सेवा तुमरी जानी नाहीं,
गुजरी उमर विकारां माहीं ।
सुन लै मेरी ज़ार, मैत्थों ... ...

तूं बख्शंद सदा बख्शंदा,
मैं मूरख अज्ञानी अन्धा।
माया मोह पसार, मैत्थों ... ...

नाल हिसाब नहीं छुटकारा,
पाप बोझ मैं सिर पर भारां।
सुन गुरुदेव पुकार , मैत्थों ... ...

नीच अंजान मैं कूकर दर दा,
" दासनदास " अर्ज इक करदा।।
मोहे निर्गुण लेहो उभार , मैत्थों ... ...

मेरी बांहें न छोड़ो जी कि सत्गुरु मैं लड़ फड़ेया तेरा।। टेक।।

हों पापी शरणागत आया,
तुम पतित उद्धारन जी कि सत्गुरु मैं यश सुनेया तेरा, मेरी ... ...

बहुत यत्न कर मन समझाया।
पया राह अवलड़े जी कि दिसदा चारों तरफ़ अंधेरा, मेरी ... ...

दुखी दीन हो दर ते आया।
कुछ होर न सुझदा जी करलो अपने दर दा चेरा, मेरी ... ...

जिसनूं त्याग देवे मेरा साहिब ।
कोई देव न झल्ले जी कि बिगड़े उसदा सांझ सवेरा, मेरी ... ...

श्री मुख तों एह वचन सुनाकर ,
अपना " दासनदास" बनाकर।
होर द्वार न दस्सी जी कि ला लवो विच हृदय दे डेरा, मेरी ... ...

तर्ज़– भारत की इक सन्नारी की ... ...

सत्गुरु जी तुम्हें हम ध्याते है करे देना बेड़ा पार
नित् तेरी जोत जगाते हैं कर देना बेड़ा पार।। टेक।।

प्रह्लाद ने तुम्हें ध्याया, नरसिंह रूपधर आया।
हम भी वह दर्शन चाहते हैं, कर ... ...

जो दीन दुःखी हो भारी, उसको है शरण तुम्हारी।
सब तेरे द्वारे आते है, कर ... ...

बेशक हम औगनहारे, जाएं तो किसके द्वारे।
सब तेरी शरण बताते है ,कर ... ...

अब अपना विरद सम्भालो , निज " दास " जान प्रितपालो।
आख़िर तेरे कहलाते है , कर ... ...

इस जन्म नहीं अगले में सहीं कभी दर्शन शाम दिखाओगे।
तुम कष्ट मिटावन हारे हो, मेरा भी कष्ट मिटाओगे।। टेक।।

हर आस को त्याग निराश हुआ, जग झूठा है विश्वास हुआ।
अब तेरे ही द्वारे पे आन पड़ा, कभी चरणों का दास बनाओगे।।

आसन इक प्रेम का तेरे लिए, है मन मंदिर में बिछवाया ।
कभी तो मन के मालिक बनकर, मेरे मन पे राज चलाओगे।।

माना मैं पतित इस योग्य नहीं, चरणों में तुम्हारे बैठ सकूं।
पर जानता हूँ बन बाप मुझे, कभी ठोकर नाथ लगाओगे।।

कई जन्मों से इक आस यही, सीने में लगाये बैठा हूं।
या तो बन जाओगे मेरे, या अपना मुझे बनाओगे।।

है नाम पतित– पावन तेरा और नाम की लाज निभाते भी हो।
तभी तो निश्चय है " दास " को ये, कभी अपना कर्म कमाओगे।।

तर्ज़– मूर्ख बंदे छोड़ के धंधे ... ...

सोहनी सूरत वालेया आ अखियां विच डेरा ला।
मोहनी मूरत वालेया हसदा– हसदा मुख दिखला।। टेक।।

चिर तों तांगा तेरियां, पाईयां मूल न फेरियां।
दो अखियां दी बेनती, सानूं ना इतना तरसा, सोहनी ... ...

अखियां ओहले आसन तेरा, तूं आवे तां मिटे अंधेरा।
मेरे चंद्रमा आन के, काली बोली रात हटा, सोहनी ... ...

अखियां दे दरवाज़े खुले, मन मंदिर तां खाली ए।
हंजुआ दा जल छिड़कया, इक वारी तां फेरा पा, सोहनी ... ...

आके अपने घर विच बैजा, दिल दी सुन जा दिल दी कहजा।
" दासनदास " पुकारदा , नंगली वालेया तेरा चाह, सोहनी ... ...

तर्ज़– सुनादे – सुनादे सुनादे कृष्णा ... ...

दिखादे– दिखादे दिखादे गुरु जी ।
तूं मैंनू अपना दर्शन दिखादे गुरु जी।।
दिखादे दरस मैं रहियां तरस–3।। टेक।।

मैं दरसन कारण आईयां ते अर्ज़ा आन सुनाईयां।
आन सुनाईयां वाह– वाह , दिखा दे ... ...

मैं जन्म – जन्म दी प्यासी , ते होईयां बहुत उदासी।
बहुत उदासी वाह– वाह, दिखा दे ... ...

मैं रो –रो कूंका मारां, देयो दर्शन अर्ज़ गुज़ारा।
अर्ज़ गुज़ारा वाह– वाह, दिखा दे ... ...

मैं '' दासनदास '' विचारा, है मलया तेरा द्वारा।
तेरा द्वारा वाह– वाह, दिखा दे ... ...

ऐसी कर कृपा गुरुदेव मेरा मन कदी वी डोले ना।। टेक।।

तेरी भक्ति सदा कमावां, विषयां दे वल मूल न जावां ।
सुच्चे मोती हीरे छड़के मनुवां ख़ाक वरोले ना , ऐसी ... ...

माया पल– पल विच डरावे, क़ौल – क़रार तों जी घबरावे।
सुंदर रूप तेरा अखियां तों होवे कदी वी ओलहे ना, ऐसी ... ...

मेरा जीव हंस हो जावे, नाम दे मोती चुन– चुन खावे।
विषय – विकारां वाली गंदगी, कौवे वांग फरोले ना, ऐसी ... ...

सत्गुरु अपनी शरणी लाओ, पापी जान के ना ठुकराओ।
भक्ति प्रेम तेरे दा सौदा,ए घट कदी वी तोले ना, ऐसी ... ...

" दासनदास " दे सत्गुरु साईं , डोलन वेले आन बचाई।
मेरी नाव करो अब पार कि विच मंझधारे डोले ना, ऐसी ... ...

तर्ज़ – रब्ब मिलदा ग़रीबी ... ...

मंगता मंगने कारण आया, दर दे सवाल करेंदा ए ।। टेक।।

मंगता मंगदा ए वरदान, सत्गुरु सुनियों देकर कान।
बख्शों चरण कमल का ध्यान, सवाली सवाल करेंदा ए, मंगता ... ...

मेरे अंदरों जाये ग़रूर, होवे मन दा मरन ज़रूर।
कृपा करके देवों दूर, जो मन ख़्याल उठेंदा ए, मंगता ... ...

ऐसा प्रेम मेरे दिल आवे, तेरी माया न भरमावे।
तेरा जलवा नज़री आवे , जो खुशहाल करेंदा ए, मंगता ... ...

बैठा – उठा जागां सोवां, हरदम याद तेरी विच होवां।
सुर्ति शब्द दे नाल पिरोवा, ए दिल , गाल भलेंदा ए, मंगता ... ...

होवां तेरा " दासनदास " निकलन बहुत सुखाले स्वांस।
अंत समे तू होवे पास, चंदू अर्ज़ करेंदा ए, मंगता ... ...

तर्ज़– न जावीं शामां वे, गोकुल नगरी नूं छोड़ के ... ...

सुन सत्गुरु प्यारे जी इक अर्ज़ ग़रीब गुज़ारदा।
विच जंगल बाड़े जी, पता पुछे प्राण आधार दा।। टेक।।

तुद बिन कौन सुनेगा साडी, किसनूं जाके कहिये।
विच दलीलां दिन ते राती, रोईये उठिये बईये।।
अज विच संसारे जी, ए हाल है औगणहार दा,सुन ... ...

याद करो जद विच मोटर दे, बैठ तुसां फ़रमाया।
थोड़े दिन तक समझो प्रेमी दर्श तुसां ने पाया।।
औ सब कौल विसारे जी, मुंह देखया ख़ाली कार दा , सुन ... ...

पता हुंदा जे एस बिछोड़े, खून हड्डा दा पीना।
मौत भली सी इस जीवन थीं, जो अज कल दा जीना।।
कर याद इकरारे जी, दिल दुखियां दुख सहार दा, सुन ... ...

किस दे नाल मैं प्रीती पाके, दुखियां दिल परचावां।
" दासनदास " कहे सत्गुरु जी, किस नाल प्यार वधावां।।
हुन बैठा द्वारे नी मैं रो रो कूकां मारदा, सुन ... ...

तर्ज़– है क्या– क्या जलवा भरा हुआ ... ...

कर जोड़ प्रथम प्रणाम करूं,श्री सत्गुरु परम प्यारे को।
कलि मल के जीवन कुटिल कामी, दृष्टि धर तारे हारन को।। टेक।।

जब जोर कलु ने आन किया, प्रभु संत रूप अवतार लिया।
मुक्ति का खोल भंडार दिया, बंद करके नरक द्वारे को, कर ... ...

सब विश्व के कर्ता –हर्ता हो, और सहजे अजर अमरता हो।
अमृत की बहती सरिता हो, प्रभु बंदना चरण तुम्हारे को , कर ... ...

हस्ती चींटी जड़ चेतन क्या, घट– घट में तेरा जलवा।
कलयुग में नाम जहाज़ बना, तै तार दिया जग सारे को, कर ... ...

जहां अनहद की धुन होती है, और निशदिन जगमग ज्योति है।
सुखमन घट कीमती मोती है, दर्सा दिया उस चमकारे को, कर ... ...

दुः ख हरता सुख के दायक हो, दीनन पर परम सहायक हो।
जड़ चेतन सबके नायक हो, ध्यान बख्शों '' दास'' बेचारे को, कर ... ...

तर्ज़– डूबत है मोरी नैया ... ...

सत्गुरु प्यारेया साईं, निभाई लड़ लगेयां दी लाज नूं।। टेक।।

ऐही दया कर प्राण प्यारे, तुद बिन जावां न और द्वारे।
अपने हाथ बजाईं, बजाईं इस बिगड़े साज़ नूं , सत्गुरु ... ...

इस दर बाझों जगत अंधेरा, नज़र आवे मैंनू इक दर तेरा।
होर न द्वार दिखाई , दिखाई इस अपने मुहताज नूं , सत्गुरु ... ...

लेखे गिन– गिन जन्म गुज़ारे, क़दर न पाई तेरी बख्शन हारे।
लेखे फाड़ गिराई , गिराई इस मूल ब्याज नूं, सत्गुरु ... ...

तेरे होकर तेरे रहिए, सब मिलकर तेरे दर ते बईए।
कृपा कर अपनाई, अपनाई इस बिछड़े समाज नूं , सत्गुरु ... ...

नंगली दर दी सुंदर धूरि, सिर धर कर लूं आशा पूरी।
" दास " ते कर्म कमाई रखां सिर इस ताज नूं, सत्गुरु ... ...

तर्ज़– इस जन्म नहीं अगले जन्म में सही ... .

जेहड़े दिल विच होवे मान तेरा, ओदे मान नूं सत्गुरु तोड़ी ना।
जिस आस रखी दर तेरे दी, ओदा हाथ पक्ड़या छोड़ी ना।। टेक।।

जेहनूं दो जग अंदर आप जिया, कोई नज़र दयालु आवे ना।
ढक परदे उसदे आप लवीं, आज़िज़ दा परदा फोड़ी ना, जेहदे ... ...

जेहदे सिर ते तेरा हाथ होवे, और हरदम तेरा साथ होवे।
ओदे नाजुक दिल दी तार ताहीं, कुछ औगण देख तरोड़ी ना, जेहदे ... ...

जेदी अखियां दे विच चाह तेरी, होवे तकदा रहिंदा राह तेरी।
ओहदे दिल दियां आसां देख ज़रा, सोहनां जिया मुखड़ा मोड़ीं ना, जेहदे ... ...

जेहनूं आखया अपना " दास " होवे, जो तेरे बाझ उदास होवे।
ओनूं विच विछोड़े रख करके, हड्डिया दा खून नचोड़ी ना, जेहदे ... ..

तर्ज़– है क्या– क्या जलवा भरा हुआ ... ...

गुरुदेव दया कर दो इतनी, बस तेरा ही नाम ध्याया करूं।
सत्गुरु धनगुरु जयगुरु कह कर, जीवन को सफल बनाया करूं।। टेक।।

जागूं तो मन निर्मान रहे, सो जाऊं तो तेरा ध्यान रहे।
आंखों को तेरी पहिचान रहे, कहीं और न नज़र दौड़ाया करूं।।

गुणगान करे जिह्वा तेरे, शुभ वाक् सुने श्रवण मेरे।
हिरदे में बसे हो चरण तेरे, जिन्हें देख मस्त हो जाया करूं।

तेरी याद में आंसू बहते रहें, चुपचाप सभी कुछ सहते रहें।
तुझसे सुनते और कहते रहें, कुछ और ना सुना सुनाया करूं।।

जब " दासनदास " हुआ तेरा, सब झगड़ा निपट गया मेरा।
मिट गया जन्म का सारा फेरा, जग देखने फिर न आया करूं।।